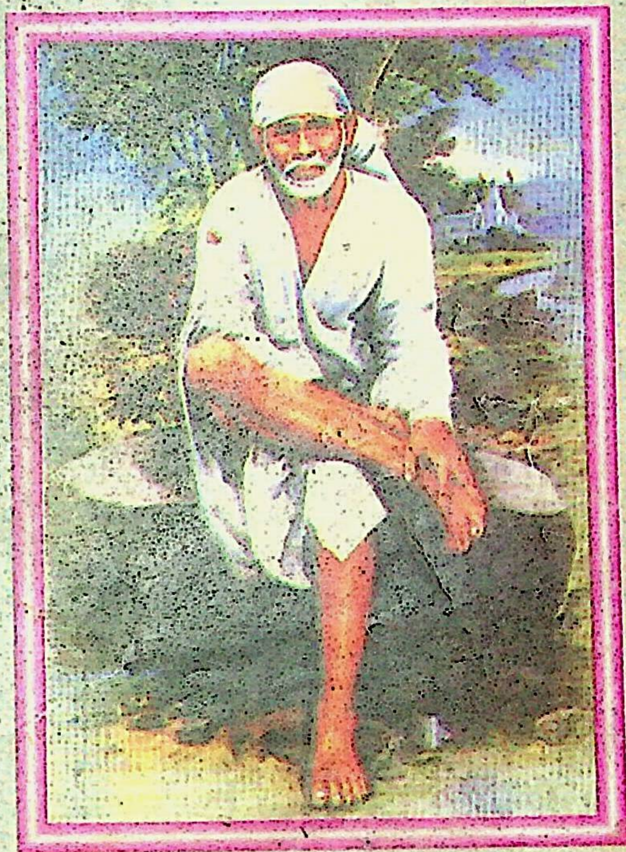
शिरडीवाले साईंबाबा का
९ गुरुवार का चमत्कारिक साईं व्रत

सुख, शांति, समृद्धि और तंदुरस्ती एवं विद्याभ्यास के लिए सचोट व्रत

(हिन्दी में)



लेखन एवं संकलन
निशा जानी

ॐ साईं राम

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्न कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।

शिरडीवाले साईंबाबाका
९ गुरुवार का चमत्कारिक साईं व्रत

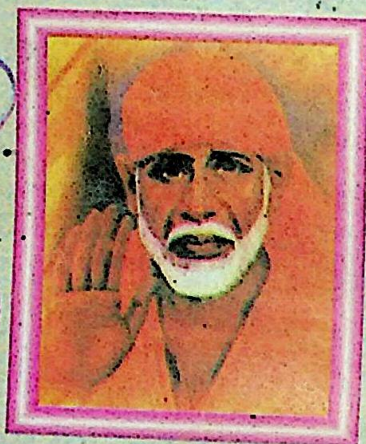
सुख, शांति, समृद्धि और तंदुरस्ती एवं विद्याभ्यास के लिए सचोट व्रत

(हिन्दी आवृत्ति)

लेखन एवं संकलन

निशा जानी

साईं राम



साईं राम

प्रकाशक : भरत जे. सैनी

१०१, सुपार्श्व अेपार्टमेन्ट, राजनगर, पालडी, अहमदाबाद-७.

फोन : ५३३११७१, ६६३२६९५

किंमत रु. [illegible]

साई तुं देव है. निराधार का आधार है.
दीनोका तारनहार है. सबका पालनहार है.



शीरडी वाले साईबाबा का
९, गुरुवार का चमत्कारीक साईव्रत

ुख, शांति, समृद्धि और तंदुरस्ती एवं विद्याभ्यास के लिए सचोट साई व्रत

भूमिका

शिरडी गाँव में नीम के वृक्ष के नीचे बालकरूप मै सांईबाबा प्रकट हुए

घरती उन की माता आकाश उनके पिताकी गोद में साईबाबा प्रकट हुए।

संतो की कोई जाति नहीं होती, दया, शांति, घर्म, ये ही संतो का घर्म है। दीन दयालु, प्यारका सागर बनकर साई भक्तोके लिये इस संसारमे प्रकट हुए सबका मालिक एक है, कह गये साई बाबा। साई बाबा का मंत्र है। श्रघ्धा और सबूरी जो व्यक्ति श्रघ्धा और घीरज रखता है उसे सांई बाबा जरुर मदद करते है, कलको भूल जोओ और आज में जीना चाहिये ये साई बाबाने सिखाया है। अपनी अंतर आत्माकी आवाज सुनकर ईश्वरमे घ्यान लगाकर साघना पथ को अपनाना चाहिये। सांईकी भक्तिकी घूनी मनमें रमाना चाहिये। ईश्वर को बहार ढूँढने की आवश्यकता नहीं वो तो अपने मनमे ही बसा हुआ है।

जो व्यक्ति साई भक्ति मनसे करता है उसके सर्व विघ्न दूर होते है सर्व दुख दूर हो जाते है सब सुखोकी प्राप्ति होती हैं। जो साईपर अटूट श्रघ्धा रखता है उसकी इच्छा साई पूरी करते है। साई बाबा ने कहा है कि मैं सत्य हु ये बात सची मानोगे तो उसका अनुभव अपने आप होगा। जो मेरी शरणमें आएगा उसके में सभी कार्य करूँगा जो मुझे जिस स्वरुपमे मानेगा उस रुप में मैं उसे दर्शन दूँगा। जो व्यक्ति सत्य सहाय लेने मेरे पास आयेगा मैं उसे सहायता करूँगा जो मुझे तन मन और वचन से याद करता है उसका ऋण मुझ पर चढ़ता है जो नित्य साई बाबा को भजता हैं उसे भेद-अभेद नही रहता

जब जब घर्म की हानि और अघर्म का उत्थान हुआ तब तब प्रभु ने कितनेही रुपोमें इस मृत्युलोक में जन्म लिया और घरती पर पुन : घर्म की स्थापना की, प्रजा को नया रास्ता दिखाया इन अवतारो में शीरडी के

साई बाबा का नाम भी प्रमुख है। शीरडी के साई बाबा नाम से कौन परिचित नही ? साई बाबा की भक्तिमे शक्ति छूपी है इसी कारण करोडो लोग उन्हें ईश्वर का अवतार कहते हैं। जब कोई साई बाबा को हिन्दू कहता तब वे कुरान शरीफ की आयाते सुनाते और जब उन्हें मुसलमान कहा जाता तो वे शिवस्त्रोत संस्कृत मैं सुनाकर सभी को सोच में डाल देते। साई बाबा ने हिन्दू मसलमान को एक सूत्र में बाँधा था।

साईबाबा किसी को शिवरुप में तो किसी को राम कृष्ण रुप मे दिखते और साई स्वरुप में तो हजारो भक्तोने अनके चमत्कार देखे है कौन कहता है की साईबाबा इस दुनिया में नही हैं ऐसा तो कोइ मूर्ख ही सोच सकता है सांई भक्त के अनुसार साई अमर ज्ञान के रुप में भक्तो के साथ हैं जो कोई भी व्यक्ति सचे दिल से उन्हें याद करता हैं तो वे उसके पास आकर खडे हो जाते हैं।

साई बाबा ने उनके जीवन कालमें कितनेही चमत्कार किये, और आज भी यदि साईबाबा की भक्ति सचे हृदय से विश्वास पूर्वक,विधि पूर्वक की जाए तो उसके परचे मिले बिना नहीं रहते साईबाबा इच्छित फल देते है ये भक्तो के अनुभव हैं।

साई बाबा साक्षात देव हैं।

साई बाबा पर श्रद्धा रख कर ९ गुरुवार का व्रत विधिपूर्वक किया जाये तो निशचित हीं इच्छित फल की प्राप्ति होती हैं। साई बाबा का व्रत कैसे किया जाये इसके लिए साई व्रत के नियम पढ़िये।

❖ श्री साई बाबा व्रतके नियम ❖

(१) ये व्रत कोई भी स्त्री पुरुष और बचेभी कर सकते हैं।
(२) ये व्रत कोई भी जाति-पाति केभेद भाव बिना कोईभी व्यक्ति कर सकता हैं।
(३) ये व्रत बहुत ही चमत्कारिक हैं। ९ गुरुवार विधि पूर्वक करने से निशचित ही इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

(४) ये व्रत कोई भी गुरुवार को सांई बाबा का नाम ले कर शुरु किया जा सकता हैं। जिस कार्य के लिये व्रत किया गया हो उसके लिये सांई बाबा को सच्चे हृदयसे प्रार्थना करनी चाहियें।

(५) सुबह या शाम को साई बाबा के फोटो की पूजा करना। किसी आसन पर पीला कपडा बिछा कर उसपर साई बाबा का फोटो रख कर स्वच्छ पानी से पोछ कर चंदन या कंकु का तिलक लगाना चाहिये और उनपर पिला फूल या हार चढ़ाना चाहिये अगर बत्ती और दीपक जलाकर सांई व्रत की कथा पढ़ना चाहिये और सांई बाबा का स्मरण करना चाहिये और प्रसाद बाँटना चाहिये (प्रसाद में कोईभी फलाहार या मिठाई बाँटी जा सकती हैं।

(६) यह व्रत फलाहार लेकर किया जा सकता है (जैसे, दूध, चाय, फल, मिठाई आदि) लेकर अथवा एक समय भोजन करके किया जा सकता हैं। बिल्कुल भूखे रहकर उपवास न किया जाय।

(७) ९ गुरुवार को हो सके तो साईबाबा के मंदिर जाकर दर्शन किए जाए साईबाबा के मंदिर न जा पाये तो (नजदीक मंदिर न हो) तो घर पर ही श्रद्धापूर्वक सांईबाबा की पूजा की जा सकती है।

(८) बहारगाँव जाना हो तो भी उस वक्त व्रत चालू रखा जा सकता है।

(९) व्रत के समय स्त्रियो को मासिक की समस्या आए अथवा किसी कारण से व्रत न हो पाये तो उस गुरुवार को ९ गुरुवार की गिनती में न लिया जाए। और उस गुरुवार के बदले अन्य गुरुवार करके ९ वें गरुवार को उद्यापन किया जाए।

❖ उद्यापन की विधि ❖

(१) ९ वें गुरुवार को उद्यापन करना चाहिए। इसमें पांच गरीब को भोजन दिया जाए (भोजन अपनी यथाशक्ति देना या करवाना)

(२) सांईबाबाकी महिमा एवं व्रत का फैलाव करने के लिए अपने सगे-सम्बन्धी या पडोसियों को यह किताबें ५, ११, २१, अपनी यथाशक्ति भेंट दी जाए। इस तरह व्रत का उद्यापन किया जाय

(३) ९ वें गुरुवार को जो किताबे भेंट देनी है उसे पूजा मैं रखिए ओर बाद में ही भेंट। दी जाए जिससे अन्य व्यक्तियो की भी मनो कामना पूर्ण हो।

उपरोक्त विधि से व्रत करने से एवं उद्यापन करने से निश्चित ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। ऐसा सांई भक्तों का विश्वास है।

✦ साईव्रत कथा ✦

कोकिला बहन और उनके पति महेशभाई शहर में रहते थे। दोनों को एक-दूसरे के प्रति प्रेम-भाव था। परन्तु महेशभाई का स्वभाव झगडालु था। बोलने की तमीज ही न थी। अडोसी-पडोसी उनके स्वभाव से परेशान थे, लेकिन कोकिला बहन बहुत ही घार्मिक स्त्री थी, भगवान पर विश्वास रखती एवं बिना कुछ कहे सब कुछ सह लेती। घीरे-घीरे उनके पति का धंधा-रोजगार ठप हो गया कुछ भी कमाई की होती थी। महेशभाई अब दिन-भर घर पर ही रहते ओर अब उन्होंने गलत राह-पकड ली। अब उनका स्वभाव पहले से भी अधिक चिड़चिड़ा हों गया।

दोपहर का समय था एक वृद्ध महाराज दरवाजे पर आकर खडे हो गये चहरे पर गजब का तेज था। और आकर उन्होंने दाल-चावल की मांग की कोकिला बहन ने दाल-चावल दिये और दोनों हाथों से उस वृद्ध बाबा कों नमस्कार किया, वुद्ध ने कहा सांई सुखी रखे। कोकिला बहन ने कहा महाराज सुख किस्मत में ही नहीं हैं ओर अपने दुःखी जीवन का वर्णन किया।

महाराज ने श्री साईबाबा के व्रत के बारे में बताया ९ गुरुवार (फलाहार) या एक सयय भोजन करना हो सके जो बेटा साईमंदिर जाना घर पर साईबाबा की ९ गुरुवार पूजा करना, साईव्रत करना और विधि से उद्यापन करना भूखे को भोजन देना, साईव्रत की किताबे ५, ११, २१, यथाशक्ति लोगों को भेंट देना। और इस तरह साई व्रत का फैलाव करना साईबाबा तेरी सभी मनोकामना पूर्ण करेंगे। यह व्रत कलयुग में बडा चमत्कारिक व्रत है। यह सभी की मनोकामना पूर्ण करना लेकिन सांईबाबा पर अटूट श्रद्धा रखना जरुरी है धीरज रखनी चाहिए। जो उपरोक्त विधि से व्रत ओर उद्यापन करेगा साईबाबा उनकी मनोकामना जरूर पूर्ण करेंगे।

कोकिला बहन नें भी गुरुवार का व्रत लिया ९ वें गुरुवार को गरीबों को भोजन दिया। सांईव्रत की पुस्तके भेंट दी उनके घर सें झगडे दूर हुए घर में बहुत ही सुखःशांति हो गई, जैसे महेशभाइ का स्वभाव ही बदल गया हो। उनका धंधा-रोजगार फिर से चालू हो गया। थोडे समय में ही सुख : समृद्धि बढ़ गइ। दोंनो पति पत्नी सुखी जीवन बिताने लगे। एक दिन कोकिला बहन के जेठ जेठानी सूरत से आए बातों ही बातों में उन्होने बताया के उनके बच्चे पढ़ाई नहीं करते। परीक्षा में फेल हो गये हे। कोकिला बहनने ९ गुरुवार की महिमा बताई। सांई बाबाके भक्ति से बच्चे अच्छी तरह अभ्यास कर पाएगें। लेकिन इसके लिए साईबाबा पर विश्वास रखना जरुरी हैं। सांई सबको सहायता करते हैं। उनकी जेठानी ने व्रत की विधि बताने के लिए कहा। कोकिला बहन नें कहा कि ९ गुरुवार फलाहार करके अथवा एक समय भोजन करके यह व्रत किया जा सकता है और ९ गुरुवार तक हो सके तो सांई मंदिर के दर्शन के लिए जान्ने को कहा। और यह कहाकि।

- ➪ यह व्रत स्त्री, पुरुष या बच्चे कोई भी कर सकते हैं। ९ गुरुवार सांई फोटोकी पूजा करना।
- ➪ फूल चढ़ाना, दीपक, अगरबती आदि करना प्रसाद चढाना एवं सांई बाबा का स्मरण करना आरती करना। आदि विधि बताई।
- ➪ साई व्रत कथा, साई स्मरण, साई चालीसा आदि का पाठ करना
- ➪ ९ वें गुरुवार को गरीबो को भोजन देना।
- ➪ ९ वें गुरुवार यह साई व्रत की किताबे अपने सगे-सबंधी, अडोशी पडोशी को भेंट देना।

सूरत से उनकी जेठानी का थोडे दिनो बाद पत्र आया कि उनके बच्चे साई व्रत करने लगे है और बहुत मन लगाके पढ़ते हैं। उन्होने भी व्रत किया था और व्रत की किताबे उनकी ओफिस में दी थी। इस बारे में उन्होनें लिखा के उनकी सहेली चारु बहन की बेटी की शादी सांई व्रत करने से बहुत ही अच्छी-जगह हो गई हैं। उनके पडोशी के गहनो का डब्बा गुम हो गया था वह सांईव्रत की महिमा के कारण दो महिने के बाद गहनो का डिब्बा नजाने कौन वापस रख गया। ऐसा अद्भुत चमत्कार हुआ था।

कोकिला बहन ने सांईबाबा कि महिमा महान है यह जान लिया था। हे सांई बाबा जैसे आप लोगो पर प्रसंन्न होते हैं। वैसे हम पर भी होना।

* सांईव्रत से होनेवाले चमत्कार *

घूटने का दर्द चमत्कारिक रुप से दूर हूआ

कोई भी रोगमें यदि सांईबाबा का नाम लिया जाए तो निश्चिंत ही दर्दमें राहत रहती हैं। और धीरे धीरे वह रोग दूर हो जाता हे।

मेरे घूटने मे दर्द होता था, कुछ दिनों पहले फेक्चर हुआ था। जिसके कारण हड्डी के कुछ कण अलग हो गए थे। और वह घूटने में चुभते थे। डॉक्टर ने ओपरेशन करने के लिए कहा था लेकिन मैंने नही करवाया और थोडे दिनोमेंही अच्छा हो गया। और फिर अचानक दर्द फिर से शुरु हुआ। छः दिन तक एक कदम भी चलने के हिंमत न थी, र्दद भी असहय था। छुट्टीओ में सभी शिरडी जानेवाले थे। वहाँ से राजस्थान घूमने जाना था। पय मेरे लिये जाना असंभव था। पैर के दर्द के कारण मेने हंगामा मचा रखा था ऐसा लगता था कि अभी मेरे घूटने से पैर अलग हो जाएगा।

मुझे सांईबाबा पर श्रद्धा थी। उपवास भी करलेती, लेकिन कभी विधि पूर्वक पूजा या कथा नही की थी। एक संबंधी ने ९ गुरुवार की महिमा बताई। मुझे भी ९ गुरुवार करने के इच्छा हुई। मैं हिंमत पूर्वक स्कूटर पर बैठकर सांईबाबा के मंदिर गई। और जा कर प्रार्थना कि मुझे भी शिरडी जाना है। राजस्थान घूमना है। और मेरी पीडा मुझसे सहन नही होती यदि मेरी पीडा मंदिर के दरवाजे के बाहर पहूंचते ही दूर हो जाएगी तो में ९ गुरुवार का व्रत विधि पूर्वक व्रत एवं उद्यापन करूँगी।

मैंने ऐसा चमत्कार तो मेरे जीवन मे कभी न देखा था। मंदिर के बाहर आते ही मेरा र्दद एकदम गायब हो गया। में घूमती, फिरती दौडती हो गई। बाद में हम सब १५ दिन के लिए राजस्थान गए। और बहुत चले और पर्वत भी चढ़े र्दद का नाम तक नही था। सांई की कृपा से।

एस.एस. सी. बोंड की परीक्षा में अच्छे प्रतिशतों से पास।

हेतल स्कूल में पढ़ती थी उसका पढ़ाई में कभी भी मन नहीं लगता था। ९ वीं कक्षा तक जैसे तैसे पास हूई। वह हमेंशा कहती कि मुझे कुछ याद नही रहता। माता-पिता चिंतित थे कि इस साल १० वीं की परीक्षा में कैसे पास होगी १० वीं की पहली, दूसरी परीक्षा में सभी विषयो में फैल हो गई किसी के कहने से ९ गुरुवार का व्रत शुरु किया। उदयापन किया। हेतल की यादशक्ति बढ़ने लगी जो शिक्षक उसकी बुराई करतें थे वे उसकी तारीफ करने लगे साईबाबा के चमत्कार से एस.एस.सी. बोर्ड की परीक्षा में ७५ % आए और फिर उसने ११ सायन्स में प्रवेश लिया।

गठान गायब हो गई।

जल्पा को कान में दर्द होने की एवं कम सुनाई देने की तकलीफ शुरु हूई स्पेश्यालिस्ट डॉक्टर को बताया गया डॉ ने कहा कि कान के पीछे गठान है सभी टेस्ट करवाए डॉक्टर ने कहा ओपरेशन करना बहुत जरूरी हैं। और फिर बोयाकसी करनी पडेगी ऐसा कह कर गठान के रोग का नाम बताया सभी लोग घबरा गए डॉक्टर ने १५ दिन बाद के लिए ओपरेशन की तारीख दी। उसी समय में जल्पा ने ९ गुरुवार का व्रत शुरु किया और उसने जिद की कि मैं ९ गुरुवार पूरे होने के बाद उद्यापन के बाद ही ओपरेशन करवाऊँगी। और ९ वें गुरुवार गरीबों को भोजन खिलाया। साईव्रत की पुस्तके भेंट दी। और अस्पताल गए सभी टेस्ट नोर्मल आए गठान गायब हो गई, थी डॉक्टर ने कहा-कुछ भी नहीं है सब तरह से ठीक है साईबाबा के प्रति जल्पा का प्रेम और विश्वास और भी बढ़ गया।

भयंकर घात में से बच गए।

रमेशभाई की पत्नि को हंमेशा कबजियात की शिकायत रहती

थी कभी कभी वे हरडे को गरम पानी के साथ ले लेती। एक दिन हरडे खाकर जैसे ही गरम पानी पिया। ग्लास का काँच टूटा शायद काँच पेटमें ही चला गया है उन्हें शंका हूई सब दूर टूकडे को ढूँढा न मिला। दो घन्टे बाद लेट्रीन के साथ खून टुट पडा, खून बंद नहीं हो रहा था रमेशभाई की पत्नि बेहोश जैसी हो गई रमेशभाई घबरा गए। रात का एक बजा था रमेशभाई साईबाबा के फोटो के सामने दीपक जलाकर प्रार्थना कि मेरी पत्नि का खून बहना बंद नहीं हो रहा खून काफी बह चुका हे यदि खून आना बंद हो जाएगा और मेरी पत्नि बच जाएगी तो मैं ९ गुरुवार का व्रत विधिपूर्वक करूँगा। थोडी देर में लेट्रीन के साथ काँच बहार आया खून बहना बंद हो गया। रात को ही उनकी पत्नि को अस्पताल ले गए डॉक्टर ने टेस्ट किए उन्होंने बताया की अंदर चोट नहीं पहुची हैं वरना जान को खतरा हो सकता था। कमजोरी है वह धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। उसके बाद उनके घर के शुभ प्रसंग में रमेशभाई की पत्नि ने खूब डांस किया। रमेशभाई ने साई व्रत किया व्रत की महिमा बढ़ाने के लिए सांई व्रत की पुस्तके भेंट दी।

ट्रान्सफर रुक गई।

नीला बहन नौकरी करती थी। उनकी ट्रान्सफर अहमदाबाद से दूर कच्छ जिल्ले में हो गई उन्हें ऐसा लगा जेसे उनके सिर पर आकाश टूट पडा हो। उनकी माता की तबियत बिगड गई। बहुत भागदौड की, लोगो से बिनंती की, लेकिन ट्रान्सफर कोई भी हालत में न रुकी। ओर यह ओर्डर हुआ कि यदि दस दिन में कच्छ जिल्ले में हाजिर न हुए तो नौकरी से निकाल दिया जाएगा। अकेले छोटे से अन्जान गाँव में जाने से वे घबराती थी। उस दिन गुरुवार था नीला बहन की सहेली नंदिता सुबह मिलने आई उसने साईबाबा पर श्रद्धा रखकर ९ गुरुवार का व्रत करने के लिए कहा उसी दिन से नीला बहन ने ९ गुरुवार का व्रत शुरु किया। तीसरे दिन पत्र मिला कि उनकी ट्रान्सफर अहमदाबाद में ही अन्य स्थल पर की हैं। साईबाबा के प्रति उनका विश्वास बढ़ गया ओर उन्होने ९ गुरुवार का व्रत पूरा किया।

गरीबों को भोजन दिया एवं साइ महिमा का प्रचार करने के लिए साइव्रत की पुस्तके भेंट दी। इस तरह व्रत का उद्यापन किया।थी कभी कभी वे हरडे को गरम पानी के साथ ले लेती। एक दिन हरडे खाकर जैसे ही गरम पानी पिया। ग्लास का काँच टूटा शायद काँच

शादी होगई।

एक भाई पढे-लिखे एवं सुन्दर थे। वे वकील के वहाँ नौकरी करते थे। परन्तु काफी बडी उम्र तक शादी न हो सकी थी कहीं भी शादी निश्चिंत नही हो रही थी। वह साईबाबा को मानते थे कभी-कभी मंदिर भी जाते थे लेकीन कभी विधि पूर्वक व्रत नही कीया था उनके मित्र बड़े साई भक्त थे। उन्होंने साईबाबा के व्रत एवं उद्यापन की बात बताई। व्रत करना, गरीबों को भोजन देना एवं साईव्रत की पुस्तकें बाँटकर व्रत की महिमा बढ़ाना उस भाई ने भी साई व्रत करने का संकल्प किया व्रत शुरु किया उद्यापन किया, उनकी शादी सुशील, सुन्दर नोकरी करती थी, ऐसी युवती से हो गई इस तरह ९ गुरुवार के व्रत का ईच्छित फल उन्हें प्राप्त हुआ।

अन्य चमत्कार।

- एक लड़का एम.कोम. तक पढ़ा था लेकिन नौकरी नहीं मिलती थी। उसने ओर उसकी माता ने व्रत किया उद्यापन किया उसे नौकरी मिल गई।
- एक कलाकार उनका परिवार उसकी कला की कमाई पर ही चलता था उन्हे नाटक टी.वी. में काम नहीं मिलता था ९ गुरुवार का उन्होने व्रत किया अचानक उनकी इस क्षेत्र में माँग बढ़ गई, प्रादेशिक पिक्चर टी.वी. सिरियल में मुख्य भूमिका में काम मिलने लगा, आर्थिक सुख समृद्धि बढ़ गई।

व्यापार चलने लगा।

व्यापार कमजोर पड गया था, कुछ कमाई नहीं हो पाती थी, ९ गुरुवार के चमत्कार से व्यापार अच्छा चलने लगा।

(चमत्कार) शादी के १८ साल बाद पुत्री का जन्म हुआ।

महेन्द्र भाई ओर रेखा बहन की शादी को सालो बित गए थे। परंतु घर में संतान न थी वे लोग उदास रहते थे रेखाबहन को ससुराल में भी बातें सुननी पडती थी। कितने ही ईलाज किये लेकिन कुछ परिणाम न मिला। रेखा बहन ने न जाने कितने ही डोरे-घागे किए पर कुछ न मिला वे सरकारी नौकरी करती थी। उनकी ओफिस मैं सुरेशभाई भी नौकरी करते थे उन्होंने ओफिस में मिठाई बाँटी। रेखाबहन ने कहा कि कौन सी खुशी में मिठाई बाँट रहे हो उन्होंने कहा कि १० साल बाद उनके वहा पुत्र जन्म हुआ है ओर उन्होने साई महिमा एवं साईव्रत के बारे में चर्चा कि और दूसरे दिन उन्होंने ९ गुरुवार के साईव्रत की पुस्तक दी। रेखा बहन को साईव्रत एवं उद्यापन करने की सलाह दी रेखाबहन ने श्रद्धापूर्वक व्रत कियां, और उद्यापन किया, शादी के १८ साल बाद उन्होंने एक पुत्री को जन्म दिया साईबाबा उन पर भी प्रसन्न हूए।

❖ एक कलाकार उनका परिवार उसकी कला की कमाई पर ही चलता था उन्हे नाटक टी.वी. में काम

 साई स्मरण 

आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई।
भक्त तुम्हे बूलाते साई।
आश हमारी टूटे ना।
विश्वास हमारा डोले ना।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

शिरडीवाले मेरे साई
भक्तो के प्यारे साई।
करुणा के सागर साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

दुःख मिटाने आओ साई।
सुख देने आओ साई।
बालक तेरे बुलाते साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

कीर्तन साई पूजन साई।
रिद्धि साई सिद्धि साई।
आनंद साई वैभव साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

तृप्ति साई मुक्ति साई।
पृथ्वी साई अंबर साई।
शांति साई ॐ साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥



पुरब साई पाश्चम साई।
उत्तर साई दक्षिण साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

हिन्दु साई मुस्लिम साई।
जीवन साई यात्रा साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

घर्म साई कर्म साई।
घ्यान साई दान साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

सत्यम् साई शिवम् साई।
सुन्दरम् साई भोला साई।
दयालु साई ईश्वर साई।
आओ साई आओ साई।
आओ साई आओ साई॥

शक्ति साई भक्ति साई।
जीवन साई मुक्ति साई।
दर्पन साई अर्पन साई।
आओ साई आंओ साई।
आओ साई आओ साई॥

श्री साई बावनी

जय ईश्वर जय साई दयाल । तू ही जगत् का पालनहार ॥ १ ॥
दत्त दिगम्बर प्रभू अवतार । तेरे बस में सब संसार ॥ २ ॥
ब्रह्माच्युत शंकर अवतार । शरणागत का प्राणाधार ॥ ३ ॥
दर्शन दे दो प्रभू मेरे । मिटा दो चौरासी फेरे ॥ ४ ॥
कफनी तेरी इक साया । झोली काँधे लटकाया ॥ ५ ॥
नीम तले तुम प्रकट हूए । फकीर बन के तूम आये ॥ ६ ॥
कलयुग में अवतार लिया । पतित पावन तुमने किया ॥ ७ ॥
शिरडी गाँव में वास किया । लोगों को मन लुभा लिया ॥ ८ ॥
चिलम थी शोभा होथों की । बंसी जैसी मोहन की ॥ ९ ॥
दया भरी थी आँखों में । अमृतधारा बातों में ॥ १० ॥
धन्य द्वारका वो माई । समा गये जहाँ साईं ॥ ११ ॥
जल जाता है पाप वहाँ । बाबा की है धूनी जहाँ ॥ १२ ॥
भूला भटका मैं अंजान । दे मुझको अपना वरदान ॥ १३ ॥
करुणा सिन्धु प्रभु मेरे । लाखों बैठे दरपे तेरे ॥ १४ ॥
अग्निहोत्री शास्त्री को । चमत्कार तूमने दिखलाया ॥ १५ ॥
जीवनदान शामा पाया । जहन साँप का उतराया ॥ १६ ॥
प्रलयकाल को रोक लिया । भक्तों को भयमुक्त किया ॥ १७ ॥
महामारी को बेनाम किया । शिरडीपुरी को बया लिया ॥ १८ ॥
प्रणाम तूमको मेरे ईश । चरणों में तेरे मेरा शीश ॥ १९ ॥
मन को आस पूरी करो । भवसागर से पार करो ॥ २० ॥
भक्त भीमाजी था बीमार । कर बैठा था सौ उपचार ॥ २१ ॥
धन्य साईं की पवित्र उदी । मिटा गई उसकी क्षय व्याधी ॥ २२ ॥
दिखलाया तूने विठ्ठल रूप । काकाजी को स्वयं स्वरूप ॥ २३ ॥

दामू को सन्तान दिया। मन उसका सन्तुष्ट किया ॥ २४ ॥
कृपानिधी अब कृपा करो। दीन दयालू दया करो ॥ २५ ॥
तन मन धन अर्पण तुमको। दे दो सद्गती प्रभु मुझको ॥ २६ ॥
मेधा तुम को न जाना था। मुस्लिम तुमको माना था ॥ २७ ॥
स्वयं तुम बन के शिवशंकर। बना दिया उसका किंकर ॥ २८ ॥
रोशनाई की चिरागों से। तेल के बदले पानी से ॥ २९ ॥
जिसने देखा आँखो हाल। हाल हुआ उसका बेहाल ॥ ३० ॥
चाँद भाई था उलझन में। घोड़े के कारण मन में ॥ ३१ ॥
साईं ने की ऐसी कृपा। घोड़ा फिर से वह पा सका ॥ ३२ ॥
श्रद्धा सबुरी मन में रखो। साईं साईं नाम रटो ॥ ३३ ॥
पूरी होगी मन की आस। कर लो साईं का नित ध्यान ॥ ३४ ॥
जान के खतरा तात्या का। दान दी अपनी आयु का ॥ ३५ ॥
ऋण बायजा का चूका दिया। तूमने साईं कमाल किया ॥ ३६ ॥
पशुपक्षी पर तेरी लगन। प्यार में तुम थे उनके मगन ॥ ३७ ॥
सब पर तेरी रहम नजर। लेते सब की खूद ही खबर ॥ ३८ ॥
शरण में तेरे जो आया। तूमने उसको अपनाया ॥ ३९ ॥
दिये हैं तुमने ग्यारह वचन। भक्तों के प्रति लेकर आना ॥ ४० ॥
कण-कण में तूमने है भगवान। तेरी लीला शक्ति महान् ॥ ४१ ॥
कैसे करुँ तेरे गुणगान। बुद्धिहीन मैं हूँ नादान ॥ ४२ ॥
दीन दयालू तूम हो दाता। हम सबके तूम हो त्राता ॥ ४३ ॥
कृपा करो अब साईं मेरे। चरणों में ले अब तूम्हारे ॥ ४४ ॥
सुबह शाम साईं का ध्यान। साईं लीला के गूणगान ॥ ४५ ॥
दृढ़ भक्ती से जो गायेगा। परम पद को वह पायेगा ॥ ४६ ॥
हर दिन सुबह शाम को। गाये साईं बावनी को ॥ ४७ ॥
साईं देंगे उसका साथ। लेकर हाथ में हाथ ॥ ४८ ॥

अनुभव तृप्ती के यह बोल। शब्द बड़े हैं यह अनमोल ॥ ४९ ॥

यकीन जिसने मान लिया । जीवन उसने सफल किया ॥ ४० ॥
साईं शक्ति विराट स्वरुप । मन मोहक साईं का रुप ॥ ५१ ॥
गौर से देखो तूम भाई । बोलो जय सद्गुरु साईं ॥ ५२ ॥

अनन्त कोटी ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज
योगीराज परब्रह्म श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु
सांईनाथ महाराज की जय
श्री सद्गुरु सांईनाथार्पणामस्तु शुभं भवतु



श्री साईं बाबा के ग्यारह वचन

(१) जो शिरडी में आएगा । आपद दूर भगाएगा ।
(२) चढ़े समाधि की सीढ़ी पर । पैर तले दुःख की पीढ़ी पर ।
(३) त्याग शरीर चलाऊँगा । भक्त हेतु दौड़ा आऊँगा ।
(४) मन में रखना दृढ़ विश्वास । करे समाधी पूरी आस ।
(५) मुझे सदा जीवित ही जानो । अनुभव करो सत्य पहचानो ।
(६) मेरी शरण आ खाली जाये । हो तो कोई मुझे बताये ।
(७) जैसा भाव रहा जिस जन का वैसा रुप हुआ मेरे मन का ।
(८) भार तुम्हारा मुझ पर होगा वचन न मेरा झूठ होगा ।
(९) आ सहायता लो भरपूर । जो मांगा वह नहीं है दूर ।
(१०) मुझमे लीन वचन मन काया । उसका ऋण न कभी चुकाया ।
(११) धन्य-धन्य व भक्त अनन्य । मेरी शरण तज जिसे न अन्य ।

श्री साई बाबा चालीसा

पहले साइ के चरणों मे, अपना शीश नवाऊँ मै ।
कैसे शिरडी साई आए, सारा हाल सुनाऊँ मैं ॥
कौन हैं माता, कौन हैं पित्ता, यह किसी ने भी न जाना ।
कहाँ जन्म साईं ने धारा, प्रश्न पहेली रहा बना ॥
कोई कहे अयोध्या के, ये रामचद्र भगवान हैं ।
कोई कहता साईंबाबा, पवन-पुत्र हनुमान हैं ॥
कोईं कहता मंगल मूर्ति, श्री गजानन हैं साईं ।
कोई कहता गोकुल-मोहन देवकीनन्दन हैं साईं ॥
शंकर समझ भक्त कई तो, बाबा की भजते रहते ।
कोई कहे अवतार दत्त का, पूजा साईं की करते ॥
कुछ भी मानो उनको तुम, पर साईं हैं सच्चे भगवान ।
बड़े दयालु, दी बंधु, कितनों को दिया जीवनदान ॥
कई बर्ष पहले की घटना, तुम्हें सुनाऊँगा मैं बात ।
किसी भाग्यशाली की, शिरडी में आई थी बारात ॥
आया साथ उसी के था, बालक एक बहुत सुन्दर ।
आया, आकर वहीं बस गया, पावन शिरडी किया नगर ॥
कई दिनों तक रहा भटकता, भिक्षा माँगी उसने दर-दर ।
और दिखाईं ऐसी लीला, जग में जो हो गई अमर ॥
जैसे-जैसे उमर बढ़ी, बढ़ती ही वैसे गई शान ।
घर-घर होने लगा नगरी में. साईं बाबा का गुणगान ॥
दिग् दिगन्त में लगा गूंजने, फिर तो साईं जी का नाम ।
दीन-दुखी की रक्षा करना, यही रहा बाबा का काम ॥
बाबा के चरणों में जाकर, जो कहता मैं हूँ निर्धन ।
दया उसी पर होती उनकी, खुल जाते दुःख के बन्धन
कभी किसी ने मांगी भिक्षा, दो बाबा मुझको सन्तान ।
एवमस्तु तक कहकर साईं, देते थे उसको वरदान ॥
स्वयं दुःखीं बाबा हो जाते, दीन-दुखी जन को देख हाल ।

अन्तःकरण श्री साईं का, सागर जैसा रहा विशाल ॥
भक्त एक मद्रासी आया, घर का बहुत बड़ा धनवान ।
माल खजाना बेहद उसका, केवल नहीं रही सन्तान ॥
लगा मनाने साईं नाथ को, बाबा मुझ पर दया करो ।
झंझा से झंकृत नैया को, तुमहीं मेरी पार करो ॥
कुल दीपक के बिना अंधेरा, छाया हुआ है घर में मेरे ।
इसीलिए आया हूँ बाबा, हो कर शरणागत तेरे ॥
कुलदीपक के अभाव में, व्यर्थ है दौलत की माया ।
आज भिखारी बनकर बाबा, शरण तुम्हारी मैं आया ॥
दे दो मुझको पुत्र-दान, मैं ऋणी रहूँगा जीवन भर ।
और किसी की आशा न मुझको, सिर्फ भरोसा है तुम पर ॥
अनुनयविनय बहुत की उसने, चरणों में धरकर के शीश ।
तब प्रसन्न होकर बाबा ने, दिया भक्त को यह आशीष ॥
'अल्ला भला करेगा तेरा', पुत्र जन्म हो तेरे घर ।
कृपा रहेगी तूम पर उसकी, और तेरे उस बालक पर ॥
अब तक नहीं किसी ने पाया, साईं की कृपा का पार ।
पुत्र रत्न दे मद्रासी को, धन्य किया उसका संसार ॥
तन-मन से जो भजे उसी का, जग में होता है उद्धार ।
साँच को आँच नहीं है कोई, सदा झूठ की होती हार ॥
मैं हूँ सदा सहारे उसके, सदा रहूँ उसका दास ।
साई जैसा प्रभु मिला है, इतनी ही क्रम है क्या आस ॥
मेर भी दिल था इक ऐसा, मिलती नहीं मुझे रोटी ।
तन पर कपड़ा दूर रहा था, शेष रहीं नन्हीं सी लँगोटी ॥
सरिता सन्मुख होने पर भी, मैं प्यासा का प्यासा था ।
दुर्दिन मेरा मेरे ऊपर, दावाग्नि बरसाता था ।
धरती के अतिरिक्त जगत् में, मेरा कुछ अवलम्ब न था ।
बना भिखारी मैं दुनिया में, दर-दर ठोकर खाता था ॥
ऐसे में इक मित्र मिला जो, परम भक्त साईं का था ।
जंजालों से मुक्त मगर, जगती में वह भी मुझ सा था

बाबा के दर्शन को खातिर, मिल दोनों ने किया विचार ।
साईं जैसे दया मूर्ति के, दर्शन को हो गए तैयार ॥
पावन शिरडी नगर में जाकर, देखी मतवाली मूरति ।
धन्य जन्म हो गया कि हमने, जब देखी साईं की सूरति ॥
जब से किए है दर्शन हमने, दुःख सारा काफूर हो गया ।
संकट सारे मिटे और, विपदाओं का हो गया अन्त ॥
मान और सम्मान मिला, भिक्षा में हमको बाबा से ।
प्रतिबिम्बित हो उठे जगत् में, हम साईं की आभा से ॥
बाबा ने सम्मान दिया है, मान दिया इस जीवन में ।
इसका ही सम्बल ले मैं, हँसता जाऊँगा जीवन में ॥
साईं की लीला का मेरे, मन पर सा असर हुआ ।
लगता, जगती के क़ण-कण में, जैसे हीं वह भरा हुआ ॥
'काशीराम' बाबा का भक्त, इस शिरडी में रहता था ।
मैं साईं का, साईं मेरा, वह दुनिया से कहता था ॥
सीकर स्वयं वस्त्र बेचता, ग्राम-नगर बाजारों में ।
झंकृत उसकी ह्र्दय तन्त्री थी, साईं की झंकारों में ॥
स्तब्ध निशा थी, थे सोये, रजनी अंचल में चाँद सितारे ।
नहीं सुझता रहा हाथ को हाथ, तिमिर के मारे ॥
वस्त्र बेचकर लौट रहा था, हाय ! हाट से 'काशी' ।
विचित्र संयोग कि उस दिन, आता था वह एकाकी ॥
घेर राह में खड़े हो गए, उसे कुटिल, अन्यायी ।
मारो काटो लूटो इसकी, ही ध्वनि पड़ी सुनाई ॥
लूट पीटकर उसे वहाँ से, कुटिल हो गये थे चम्पत ।
आघातों से मर्माहत हो, उसने दी थी संज्ञा खो ॥
बहुत देर तक पड़ा रहा वह, वहीं उसी हालत में ।
जाने कब कुछ होश हो उठा, उसको किसी पलक में ॥
अनजाने ही उसके मुँह से, निकल पड़ा था साई ॥
जिसकी प्रतिध्वनि शिरडी में, बाबा को पड़ी सुनाई ॥
क्षुब्ध उठा हो मानस उसका, बाबा गए विकल हो ।

लगता जैसे घटना सारी, घटी उन्हीं के सन्मुख हो ॥
उन्मादी से इधर-उधर तब, बाबा लगे भटकने ।
सन्मुख चीजे जो भी आईं, उनको लगे पटकने ॥
और धधकते अंगारो में, बाबा ने अपना कर डाला ।
हुए शशंकित सभी वहाँ, लख ताण्डव नृत्य निराला ॥
समझ गए सब लोग कि कोई, भक्त पड़ा संकट में ।
क्षुभित खड़े थे सभी वहाँ पर, पड़े हुए विस्मय में ॥
उसे बचाने की ही खातिर, बाबा आज विकल हैं ।
उसकी ही पीड़ा से पीड़ित, उनका अन्तःस्तल है ॥
इतने में ही विधि ने अपनी । विचित्रता दिखलाई ।
लख कर जिसको जनता की, श्रद्धा सरिता लहराई ॥
लेकर संज्ञाहीन भक्त को, गाड़ी एक बहाँ आई ।
सन्मुख अपने देख भक्त को, साईं की आंखे भर आईं ॥
शान्त, धीर, गंभीर सिन्धु सा, बाबा का अन्तःस्तल ।
आज न जाने क्यों रह-रहकर, हो जाता था चंचल ॥
आज दया की मूर्ति स्वयं था, बना हुआ उपचारी ।
और भक्त के लिए आज था, देव बना प्रतिहारी ॥
आज भक्ति की विषम परीक्षा में सफल हुआ था काशी ।
उसके ही दर्शन की खातिर, थे उमडे नगर-निवासी ॥
जब भी और जहाँ भी कोई, भक्त पड़े संकट में ।
उसकी रक्षा करने बाबा, जाते हैं पलभर पें ॥
युग-युग का है सत्य यह, नहीं कोई नई कहानी ।
आपतग्रस्त भक्त जब होता, जाते खुद अन्तर्यामी ॥
भेदभाव से परे पुजारी, मानवता के थे साई ॥
जितने प्यारे हिन्दु-मुस्लिम, उतने ही थे सिख-ईसाई ॥
भेदभाव मन्दिर-मस्जिद का तोड़फोड़ बाबा ने डाला ।
राम रहीम सभी उनके थे, कृष्ण करीम अल्लाताला ॥
घण्टे की प्रतिध्वनि से गूँजा, मस्जिद का कोना-कोना ।
मिले परस्पर हिन्दू-मुस्लिम, प्यार बढ़ा दिन-दिन तूना ॥

चमत्कार था कितना सुन्दर, परिचय इस काया ने दी।
और नमी कड़ुवाहट में भी, मिठास बाबा ने भर दी॥
सब को स्नेह दिया साईं ने, सबको अनतुल प्यार किया।
जो कुछ जिसने भी चाहा, बाबा ने उसको वही दिया॥
ऐसे स्नेह शील भजन का, नाम सदा जो जपा करे।
पर्वत जैसा दुःख क्यों न हो, पलभर में वह दूर टरे॥
साईं जैसा दाता हमने, अरे नहीं देखा कोई।
जिसके केवल दर्शन से ही, सारी विपदा दूर गई॥
तन में साईं, मन में साईं, साईं-साईं भजा करो।
अपने तन की सुधि-बुधि खोकर, सुधि उसकी तुम किया करो॥
जब तू अपनी सुधि तजकर, बाबा की सुधि किया करेगा।
और दिन-रात बाबा, बाबा ही तू रटा करेगा॥
तो बाबा को अरे! विवश हो, सुधि तेरी लेनी ही होगी।
तेरी हर इच्छा बाबा को पूरी करनी ही होगी॥
जंगल जंगल भटक न पामल, और ढूंढ़ने बाबा को।
एक जगह केवल शिरडी में, तू पायेगा बाबा को॥
धन्य जगत् में प्राणी हैं वह, जिसने बाबा को पाया।
दुःख में, सुख में प्रहर आठ हो, साईं का ही गुण गाया॥
गिरे संकटों के पर्वत, चाहे बिजली ही टूट पड़े।
साईं का ले नाम सदा तुम, सन्मुख सब के रहो अड़े॥
इस बूढ़े की सुन करामात, तुम हो जावोगे हैरान।
दंग रह गए सुन कर जिसको, जोने कितने चतुर सुजान॥
एक बार शिरडी में साधु, ढोंगी था कोई आया।
भोलीभाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया॥
जड़ी-बूटियाँ उन्हें दिखाकर, करने लगा वहाँ भाषण।
कहने लगा सुनो श्रोतागण, घर मेरा है वृन्दावन॥
औषधि मेरे पास एक है, और अजब ईसमें शक्ति।
इसके सेवन करने से ही, हो जाती दुःख से मुक्ति॥
अगर मुक्त होना चाहो तुम, संकट से, बीमीरी से।

तो है मेरा नम्र निवेदन, हर नर से, हर नारी से ॥
खरीद लो तूम इसको इसकी, सेवन विधियाँ हैं न्यारी ।
यद्यपि तुच्छ वस्तु है यह, गुण इसके हैं अतिशय भारी ॥
जो हैं संतति हीन यहाँ यदि, मेरी औषधि को खायें ।
पुत्र-रत्न हो प्राप्त, अरे और वह मुँह माँगा फल पायें ॥
औषध मेरी जो न खरीदे, जीवन भर पछतायेगा ।
मुझ जैसा प्राणी शायद ही, अरे यहाँ आ पायेगा ॥
दुनिया दो दिन का मेला है, मौज शौक तुम भी कर लो ।
गर इससे मिलता है, सब कुछ, तुम भी इसको ले लो ॥
हैरानी बढ़ती जनता की ; लख इसकी कारस्तानी ।
प्रमुदित वह भी मन-ही-मन था, लख लोगों की नादानी ॥
खबर सुनाने बाबा को यह, गया दौड़कर सेवक एक ।
सुनकर भृकुटी तनी और, विस्मरण हो गया सभी विवेक ॥
हूक्म दिया सेवक को, सत्वर पकड़ दुष्ट को लाओ ।
या शिरडी की सीमा से, कपटी को दूर भगाओ ॥
मेरे रहते भोलीभाली, शिरडी की जनता को ।
कौन नीच ऐसा जो, साहस करता है छलने को ॥
पलभर में ही ऐसे ढोंगी, कपटी नीच लुटेरे को ।
महानाश के महागर्त में, पहुँचा दूँ जीवन भर को ॥
तनिक मिला आभास मदारी;क्रूर, कुटिल, अन्यायी को ।
काल नाचता है अब सिर पर, गुस्सा आया साईं को ॥
पलभर में सब खेल बन्द कर, भागा सिर पर रख कर पैर ।
सोच रहा था मन ही मन, भगवान नहीं है क्या अब खैर ॥
सच है साई जैसा दानी, मिल न सकेगा जग में ।
अंश ईश का साईं बाबा, उन्हे न कुछ भी मुश्किल जग में ॥
स्नेह, शील, सौजन्य आदि का, आभूषण धारण कर ।
बढ़ता इस दूनिया में जो भी, मानव-सेवा के पथ पर ॥
वही जीत लेता है जगती, के जन-जन का अन्तःस्तल ।
उसकी एक उदासी ही जग को, कर देती है विह्वल ॥

रुखी-सुखी ताजी बासी, चाहे या होवे पकवान ।
सदा प्यार के भूखे साईं की; खातिर थे सभी समान ।।
स्नेह और श्रद्धा से अपनी, जन जो कुछ दे जाते थे ।
बड़े चाव से उस भोजन को, बाबा पावन करते थे ।।
कभी-कभी मन बहलाने को, बाबा बाग में आते थे ।
प्रमुदित मन निरख प्रकृति, छटा को वे होते थे ।।
रंग-बिरंगे पुष्प बाग के, मन्द-मन्द हिल-डुल करके ।
बीहड़ वीराने मन में भी स्नेह सलिल भर जाते थे ।।
ऐसी सुमधुर बेला में भी, दुःख आपत, विपदा के मारे ।
अपने मन की व्यथा सुनाने, जन रहते बाबा को घेरे ।।
सुनकर जिसकी करुण कथा को, नयन कमल भर आते थे ।
दे विभूति हर व्याथा, शन्ति ; उनके उर में भर देते थे ।।
जाने क्यो अद्‌भुत, शक्ति उस विभूति में होती थी ।
जो धारण करते मस्तक पर, दुःख सारा हर लेती थी ।।
धन्य मनुज वे साक्षात दर्शन, जो बाबा साईं के पाये ।
धन्य कमल कर उनके जिनसे, चरण-कमल वे परसाये ।।
काश निर्भय तुमको भी, साक्षात साईं मिल जाता ।
बरसों से उजड़ा चमन अपना, आज फिर से खिल जाता ।।
गर पकड़ता मैं चरण श्री के, नहीं छोड़ता ऊम्र भर ।
मना लेता मैं जरुर उनको, गर रुठते साईं मुझ पर ।।
जब-जब जग में भार पाप का, बढ़ता ही जाता है ।
उसे मिटाने की ही खातिर, अवतारी ही आता है ।।
पाप और अन्याय सभी कुछ, इस जगती का हर के ।
दूर भगा देता दुनिया के दावन में क्षण भर में ।।
समता का यह पाठ पढ़ाया, सबको अपना आप मिटाकर ।।
नाम द्वारका मस्जिद का, रखा शिरडी में साई ने ।
दाप, ताप, सन्ताप मिटाया, जो कुछ आया साई ने ।।
सदा याद में मस्त राम की, बैठे रहते थे साई ।
पहर आठ ही राम नाम का भजते रहते थे साई ।।

* दत्त बावनी *

जय योगीश्वर दत दयाल तुं है जगमें प्रतिकाल।
अत्र्यनसूया करके निमित, प्रकट हुए जगकारन निश्चित।
ब्रह्मा हरी-हरके अवतार, शरणागत के तारनहार।
अंतर्यामी सत चित-सुख, बहारसद्गुरु द्विभुज सुमुख।
झोली अन्नपूर्णा की करमें, शांति कमंडल कर में सुशोभित।
कहीं चतुर्भुज षडभुज सार अनंतबाहु तुं निर्धार।
आया शरण में बाल अन्जान उठ दिगंबर चले प्राणं।
सुनकर अर्जुन की आवाज प्रसन्न हुए पूर्व में तुं साक्षात।
दी रिद्धि, सिद्धि अपार अंतमे मुक्ति महापद सार।
किया क्यों आज विलंब ? तुझ बिन मेरा कोई न सहारा।
विष्णुं शर्म, द्विज को तारा ऐसे जिमे श्राद्ध में देखकर प्रेम।
जंभदेत्य से परेशान देव, की महेरबानी वहाँ तुरंत।
फैला दी माया, दिति सुत ईन्द्रकरमें नाश किया तुरंत।
ऐसी लीला कौन-कौन सी सर्व की वर्णन कहो वो सर्व (शिवरुप)
दौड़कर आए सुतको काम। किया उसे वो निष्काम।
ऐसी तेरी कृपा आपार क्यों सुने ना मेरी आवाज ?
दौड, अंत ना देख अनंत मा कर अधवय शिशुका अंत।
देखकर द्विजस्त्री का स्नेह, हुआ पुत्र तुं निःसंदेह।
स्मर्तुगामी कलितार कृपाल, तारा धोबी गँवार तक।
पेटपिड से तारण किया विप्रको ब्राह्मण शेठ उद्धार किया शीघ्र।
क्यों न करते मेरा ख्याल जो आणीगम एक ही बार।
शुष्क, काष्ठ और लाये पत्र, हुआ क्यों उदासीन यहां ?
जर्जर वंध्या उसके सपने, किए सफल उस सुत के सब कार्य।
किया दूर ब्राह्मण का कोढ़ पूर्ण की उसकी सभी एच्छाएँ।
झालर खाकर प्रसन्न हुए ऐसे, दिया सुवर्ण घट सप्रेम।

ब्राह्मण स्त्री का मृत भरथार, किया सजीवन करने का निर्धार।
पिशाच पीडा की दूर, विप्रपुत्र उठाया शूर।
हरी विप्रमद अंत्यज हाथ, रक्षा भक्त त्रिविक्रम तात।
निमेष सिर्फ तंतुक एक पहुँचाया श्री शैले देख।
एक साथ में आठ स्वरुप, धारण किए देव, बहुरुप, अरुप।
संतोष दिया निज भक्त सुजात देकर परचे साक्षात।
यवनराज की टाल दी पीड, जाति-पाति की तुझे न चिंड।
रामकृष्ण रुप में ऐसे की लीलाएँ कई ऐसे।
तार दिया पथ्थर गणिका-व्याघ्र पशु पंखी भी तुझे साधे।
अधमो ओधारण तेरा नाम गाने से क्या नहीं होते काम।
आधि-व्याधि परेशानी सर्व, टलती है स्मरण मात्र से सर्व (शिवके स्मरणसे)।
मूठ चोट न लगे ये जान। प्राप्त करते है नर स्मरणसे निर्वाण।
भूत, चुडैल, जंद, असुर मुट्ठी बांधके भागते है तुरंत दतधुन सुनतेही मूर्त।
करके धूप गाते है जो दतबावनी ये सप्रेम।
सुधरे उसके दोनों लोक, रहते नहीं कहीं भी शोक।
दासी सिद्धि उसकी होती, दुःख उसके दरिद्र जाते।
बावन गुरुवार नितनियम करता पाठ बावन सप्रेम।
यथावकाशे नित्य नियम उसे कभी भी न दंडते यम।
अनेक रुपमें वो ही अभंग, भजने से न सताती माया का रंग।
सहस्त्र नाम से नामी एक, दत दिगंबर असंग तक।
वंदना करुँ में तेरी बारम्बार, वेद श्वास तेरा निर्धार।
थकते वर्णन करते जहाँ शेष, कोन रंक में बहुकृत वेष।
अनुभव, तृप्ति का उद्गार। सुना होगा वो खायेगा मार।
तपसि तत्वमसि वो देव, बोलो जय जय श्री गुरुदेव।

◆ गुरु ॐ ◆

ॐ श्री साई गणेशाय नम : ॥ १ ॥ ॐ सत गुरु साईं नाथाय नम : ॥ २ ॥
ॐ जगद् गुरु साईं नाथाय नम : ॥ ३ ॥ ॐ परम गुरु साईं नाथाय नम : ॥ ४ ॥
ॐ देव गुरु सांईं नाथाय नम : ॥ ५ ॥ ॐ साईं शिव शक्तियै नम : ॥ ६ ॥
ॐ साईं सर्वशक्तिमानाय नम : ॥ ७ ॥ ॐ साईं सर्वव्यापंकाय नम : ॥ ८ ॥
ॐ साईं सर्वआत्माय नम : ॥ ९ ॥ ॐ साईं अलख निरंजन ॥ १० ॥
ॐ साई सर्व साक्षीयाय नम · ॥ ११ ॥ ॐ साई अन्तरयामियाय नम : ॥ १२ ॥
ॐ साईं परिपूरजाथ नम : ॥ १३ ॥ ॐ साईं आदि शक्तियै नम : ॥ १४ ॥
ॐ साईं अनादि शक्तियै नम : ॥ १५ ॥ ॐ साईं रामाय नम : ॥ १६ ॥
ॐ साईं त्रिलोकिनाथाय नम : ॥ १७ ॥ ॐ साईं त्रैकलदर्शीयाय नम : ॥ १८ ॥
ॐ साईं गोविन्दाय नम : ॥ १९ ॥ ॐ साईं सच्चिदानन्द स्वरुपाय नम : ॥ २० ॥
ॐ साईं भक्त रक्षकाय नम : ॥ २१ ॥ ॐ साईं परमआनंद स्वरुपाय नम : ॥ २२ ॥
ॐ साईं महादुर्गायै नम : ॥ २३ ॥ ॐ साईं आकर्षण शक्तियाय नम : ॥ २४ ॥
ॐ साईं अज्ञान विनाशकाय नम : ॥ २५ ॥ ॐ साईं योगीश्वराय नम : ॥ ५६ ॥
ॐ साईं पुरुषोत्तम पुरुषाय नम : ॥ २७ ॥ ॐ साईं शंकराय नम : ॥ २८ ॥
ॐ साईं सुख स्वरुपाया नम : ॥ २९ ॥ ॐ साईं कल्याण स्वरुपाय नम : ॥ ३० ॥
ॐ साईं जग आधाराय नम : ॥ ३१ ॥ ॐ साईं रघुनंदनाय नम : ॥ ३२ ॥
ॐ साईं देव रक्षकाय नम : ॥ ३३ ॥ ॐ साईं असुर संहारियाय नम : ॥ ३४ ॥
ॐ साईं कर्म-फल-दाताय नम : ॥ ३५ ॥ ॐ साईं दातात्राय नम : ॥ ३७ ॥
ॐ साईं कर्ता पुरुषाय नम : ॥ ३७ ॥ ॐ साईं दीनबन्धु आय नम : ॥ ३८ ॥
ॐ साईं भगत-भयहारियाय नम : ॥ ३९ ॥ ॐ साई दुख निवारणाय नम : ॥ ४० ॥
ॐ साईं अकाल पुरुषाय नम : ॥ ४१ ॥ ॐ साईं आदि नारायणाय नम : ॥ ४२ ॥
ॐ साईं लीलाधारियाय नम : ॥ ४३ ॥ ॐ साईं जनहित कारियाय नम : ॥ ४४ ॥
ॐ साईं शिव-शम्भूआय नम : ॥ ४५ ॥ ॐ साईं आपत्ति हरनाय नम : ॥ ४६ ॥
ॐ साईं शरणागतः वस्तलाय नम : ॥ ४७ ॥ ॐ साईं माघवाय नम : ॥ ४८ ॥
ॐ साईं राखनहाराय नम : ॥ ४९ ॥ ॐ साईं जगंत कारणाय नम : ॥ ५० ॥
ॐ साईं सद्गति दाताय नम : ॥ ५१ ॥ ॐ साईं महाकालिकायै नम : ॥ ५२ ॥

ॐ साईं करुणासिन्धुआय नम : ॥ ५३ ॥ ॐ साई सर्वेश्वरा नम : ॥ ५४ ॥
ॐ साईं जगदीश्वराय नम : ॥ ५५ ॥ ॐ साईं अकालशक्तियै नम : ॥ ५६ ॥
ॐ साईं पतित पावनाय नम : ॥ ५७ ॥ ॐ साईं विश्वनाथाय नम : ॥ ५८ ॥
ॐ साईं वेद स्वरुपाय नम : ॥ ५९ ॥ ॐ साईं सुख दाताय नम : ॥ ६० ॥
ॐ साईं हरि नारायणाय नम : ॥ ६१ ॥ ॐ साईं सत्य-स्वरुपाय नम : ॥ ६२ ॥
ॐ साईं सर्व-सामर्णाय नम : ॥ ६३ ॥ ॐ साईं ज्योति-स्वरुपाय नम : ॥ ६४ ॥
ॐ साईं महालक्ष्मियै नम : ॥ ६५ ॥ ॐ साईं हरि गोविन्दाय नम : ॥ ६६ ॥
ॐ साईं सोहम देवाय नम : ॥ ६७ ॥ ॐ साईं ओंकार स्वरुपाय नम : ॥ ६८ ॥
ॐ साईं महासरस्वत्यै नम : ॥ ६९ ॥ ॐ साईं माया विनाशकाय नम : ॥ ७० ॥
ॐ साईं व्यंकटेश्वराय नम : ॥ ७१ ॥ ॐ साईं हरि विट्ठलाय नम : ॥ ७२ ॥
ॐ साईं मोह विनाशकाय नम : ॥ ७३ ॥ ॐ साईं विपित्ति भंजनाथ नम : ॥ ७४ ॥
ॐ साईं भक्ति दाताय नम : ॥ ७५ ॥ ॐ साईं मुक्ति दाताय नम : ॥ ७६ ॥
ॐ साईं ज्ञान दाताय नम : ॥ ७७ ॥ ॐ साईं गोपीवल्लभाय नम : ॥ ७८ ॥
ॐ साईं भवतारकाय नम : ॥ ७९ ॥ ॐ साईं सर्वप्रियाय नम : ॥ ८० ॥
ॐ अपराध हर्ताात नम : ॥ ८१ ॥ ॐ साईं पंढरीनाराय नम : ॥ ८२ ॥
ॐ साईं कृपा सागराय नम : ॥ ८३ ॥ ॐ साईं मंगलकारी देवाय नम : ॥ ८४ ॥
ॐ साईं अमंगलहारी देवाय नम : ॥ ८५ ॥ ॐ साईं अमृत सिन्धुआय नम : ॥ ८६ ॥
ॐ साईं शान्ति दाताय नम : ॥ ८७ ॥ ॐ साईं चन्द्रमौलिश्वराय नम : ॥ ८८ ॥
ॐ साईं जगत् रुपाय नम : ॥ ८९ ॥ ॐ साई आत्म ज्योतियाय नम : ॥ ९० ॥
ॐ साईं लक्ष्मीनारायणाय नम : ॥ ९१ ॥ ॐ साईं अभेद शक्तियाय नम : ॥ ९२ ॥
ॐ साईं विश्वआत्माय नम : ॥ ९३ ॥ ॐ साईं परमात्माय नम : ॥ ९४ ॥
ॐ साईं भक्त वत्सलाय नम : ॥ ९५ ॥ ॐ साईं अग्नि रुपाय नम : ॥ ९६ ॥
ॐ साईं गायत्रियै नम : ॥ ९७ ॥ ॐ साईं महाअम्बिकायै नम : ॥ ९८ ॥
ॐ साईं धर्म रक्षकायै नम : ॥ ९९ ॥ ॐ साईं सिद्धि-दातायै नम : ॥ १०० ॥
ॐ साईं ऋद्धि-दातायै नम : ॥ १०१ ॥ ॐ साईं उरप्रकाय नम : ॥ १०२ ॥
ॐ साईं साधु-रक्षकाय नम : ॥ १०३ ॥ ॐ साईं चिन्तानाशकाय नम : ॥ १०४ ॥
ॐ साईं आनन्द मूरताय नम : ॥ १०५ ॥ ॐ साईं भाग्य-विधाताय नम : ॥ १०६ ॥
ॐ साईं हरि-हराय नम : ॥ १०७ ॥ ॐ साईं पारब्रह्माय नम : ॥ १०८ ॥

* साईबाबा का भोग *

भोग लगाओ साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
प्रीति के पकवान बनाए और भाव भरे भोजन मेने अपने हाथ से
कहो तो मंगाऊँ ताजा मेवा बरफी पेंडा पकवान रे मेरा प्रेम भरा थाल
गंगा जमुना के नीर लाऊँ प्रेम से पान कराऊँ
भोग लगाओ साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
सबरी सुदामा ओर विदूर की भाजी
ऐसी तृप्ति कर लेना मेरे साईबाबा भोग लगाओ
साईबाबा मेरा प्रेम भरा थाल। लोंग सुपारी भरे पान के बीडे
मुखवास करो मेरे साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
भक्तो के साई प्यारे तेरी हे जय-जयकार मेरा प्रेम भरा थाल

* साईबाबा की आरती *

आरती श्री साईं गुरुवर की, परमानन्द सदा सुखर की।
जाकी कृपा विपुल सुखकारी। दुःख, शोक, संकट, भयहारी ॥ १ ॥
शिरडी में अवतार रचाया। चमत्कार से तत्व दिखाया ॥ २ ॥
कितने भक्त चरण पर आये। वे सुख-शान्ति चिन्तन पाये ॥ ३ ॥
भाव धरे जो मन में जैसा। पावन अनुभव वो ही वेसा ॥ ४ ॥
गुरु की उदी लगावे तन को। समाधान लाभत उस मन को ॥ ५ ॥
साईं नाम सदा जो गावे। सो फल जग में शाश्वत पावे ॥ ६ ॥
गुरुवार करि पूजा सेवा। उस पर कृपा करत गुरुदेवा ॥ ७ ॥
राम, कृष्ण, हनुमान, रुप में। दे दर्शन जानत जो मन में ॥ ८ ॥
विविध धर्म के सेवक आते। दर्शन कर इच्छित फलपाते ॥ ९ ॥
जै बोलो साईं बाबा की। जै बोलो अवधूत गुरु की ॥ १०॥
'साईं दास' आरती को गावे। घर में बसे सुख मंगल पावे ॥ ११ ॥

❋ नाम स्मरण ❋

हरे राम हरे राम राम-राम हरे हरे
हरे क्रिष्ण हरे क्रिष्ण क्रिष्ण हरे हरे
हरे साई हरे साई साई साई हरे हरे
हरे बाबा हरे बाबा बाबा बाबा हरे हरे
हरे दत्त हरे दत्त दत्त दत्त हरे हरे

❋ साईं वंदना-१ ❋

रहम नजर करो अब मोरे साईं।
तुम बिन नहीं मुझे माँ-बाप-भाई।
मैं अन्धा हूँ बन्दा तुम्हारा।
मैं ना जानूं अल्ला इलाहीं।
खाली जमाना मैंने गंवाया।
साथी आखर का किया न कोई इलाहीं।
अपने मस्जिद का झाडू भक्त है।
मालिक हमारे तुम बाबा साईं।

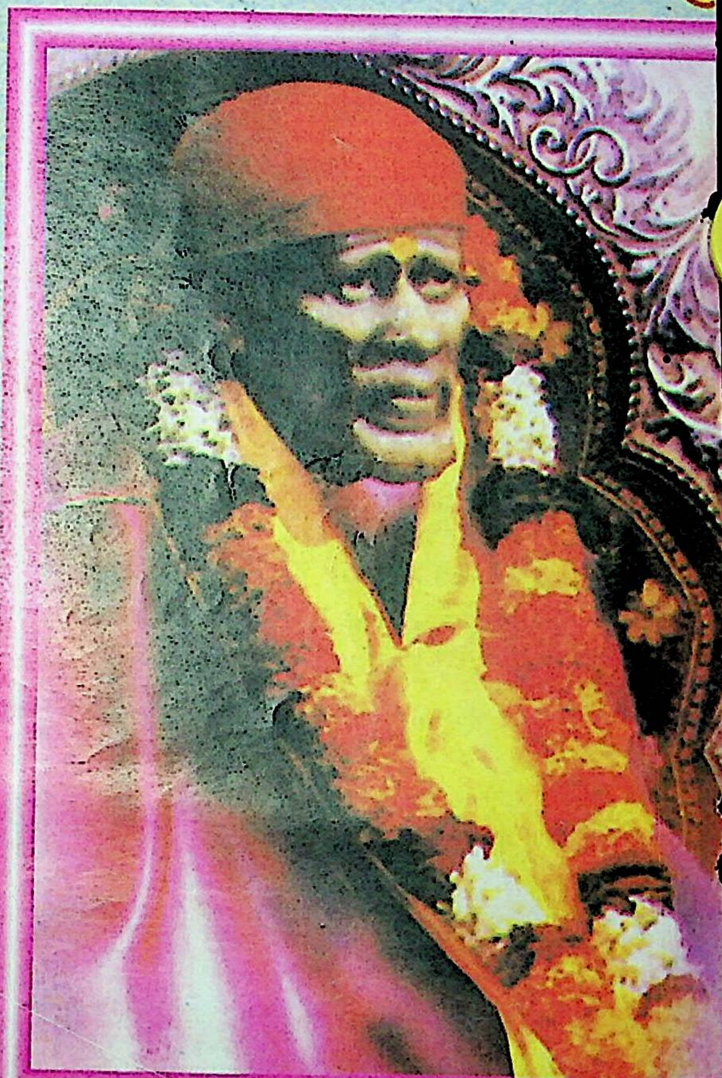
❋ साईं वंदना-२ ❋

साईं रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना।
जाना तुमने जगत् पसारा, सब ही झूठ जमाना।
मैं अन्धा हूँ बन्दा आपका, मुझ को प्रभु दिखलाना।
भक्त कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना।

साईं राम... साईं राम... साईं राम...
साईं श्याम... साईं श्याम... साईं श्याम...

श्रध्धा
सबुरी

श्रध
सबु



श्री साईं राम

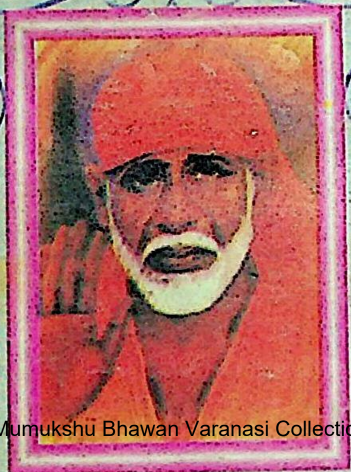
ॐ साईं राम

जीवन संदेश

मानवजीवन बहुमूल्य है। उसका सदुपयोग करें। ईश्वरने हमको इस पृथ्वी पर भेजा और ईश्वर को ही भूल जाए ये कैसे हो सकता है ? ईश्वर का हमेंशा स्मरण करें। दीन-दुखियों को हो सके उतनी मदद करें। दूसरे के दुखमें सहभागी बने उसको आश्वासनके दो मीठे वचन बोले। हंमेशा दूसरेका भला करे, अपमान को सहन करे, और दया करे।

जीवन में सहृदयी और प्रमाणिक बने। वृद्ध और बच्चों पर हंमेशा प्रेमभाव रखे, माता-पिता की सेवा करे, क्रोध का त्याग करे, अभिमान छोडे और नम्र और विवेकी बने, ब्रह्मचर्य का पालन करे. परमेश्वर-ने जीवन दिया है, उनकी भक्ति में तल्लीन बने।

साईं राम



साईं राम